स्वदेश ज्योति

अब वैश्विक हो चला है भारत का 'साहित्य'

एशिया के सबसे बड़े 'साहित्योत्सव' में देश के 700 से ज्यादा लेखकों की भागीदारी

दीपक पगारे, नई दिल्ली

देश की राजधानी नई दिल्ली में माह पांच दिनी एशिया का सबसे बड़ा साहित्यिक उत्सव 'साहित्योत्सव 2025' संपन्न हुआ। मार्च के दूसरे सप्ताह में साहित्य, सिनेमा सहित विभिन्न विषयों पर व्याख्यान, बहुभाषी कविता पाठ, सम्मान एवं पुरस्कार वितरण तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। पांच दिनी इस बौद्धिक जलसे में देश भर के करीब 700 से ज्यादा साहित्यकारों की भागीदारी रही। यह सभी गतिविधियां पांच सभागारों में हुई, जिनके नाम देश की प्रसिद्ध नदियों पर रखे गये थे। इनमें- गंगा,नर्मदा, गोदावरी, ब्रह्मपुत्र तथा कावेरी शामिल रहे। इन सभागारों के बाहर उस नदी के बारे में बहुत ही उपयोगी जानकारी भी दी गई थी।

समारोह का शुभारंभ करते हुए केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि

भारत को एकता के सूत्र में बाँधने वाला सबसे मजबूत तंतु साहित्य है। उन्होंने भारत के साहित्य की गतिशीलता और जीवंतता को उसकी विशेषता बताते हुए कहा कि तकनीक के समय में अनुवाद के जरिए हमारा साहित्य अब वैश्विक होने लगा है। अब उस पर चर्चा प्रारंभ हो गई है। पूरी दुनिया का भारत को देखने का नजरिया बदला है।

साहित्योत्सव के चौथे दिन 22 से अधिक कार्यक्रमों में विभिन्न भारतीय भाषाओं के 140 से ज्यादा लेखकों ने भागीदारी की। इन कार्यक्रमों में पाँच बहुभाषी कवि सम्मिलन और चार कथा सम्मिलनों के साथ ही स्वतंत्रता-पूर्व भारतीय साहित्य में 'राष्ट्र' की अवधारणा, क्या कॉमिक्स साहित्य है?, रंगमंच, भारतीय समाज में परिवर्तन के प्रतिबिंब के रूप में, सांस्कृतिक रूप से भिन्न भाषाओं में साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में चुनौतियां, प्रवासी लेखन में मातृभूमि आदि विषयों पर परिचचाएं हुई। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा ने कहा कि साहित्य और कानून का आपस में गहरा संबंध है। साहित्य का सामाजिक न्याय के साथ सुखद गरिमापूर्ण और प्रभावशाली संबंध है। इसी दिन के आखिरी सत्र में बहुभाषी कविता पाठ 'सीधा दिल से' शीर्षक से हुआ। सुप्रसिद्ध गीतकार डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र की अध्यक्षता में आभा बोधिसत्त्व,दीपक पगारे,राजेंद्र उपाध्याय (हिंदी), गायत्रीबाला पंडा(ओडिया, संस्कृति मिश्रा (मैथिली), राजेंद्र राठौड़ (मराठी) तथा विनैयन (तमिल) ने कविता पाठ किया।

दिव्यांग लेखकों और बच्चों के हुए सत्र

दिव्यांग लेखकों एवं साहित्य में रुचि रखने वाले बच्चे भी साहित्योत्सव का हिस्सा बने। 10 भाषाओं के दिव्यांग लेखकों ने विनोद आसुदानी एवं अरविंद पी. भाटीकर की अध्यक्षता में काव्य-पाठ एवं कहानी पाठ प्रस्तुत किया।